

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था, मुंबई

हिन्दी 11

मीराबाई
मॉड्यूल-2

पेज-1

कृष्ण भक्त कवियों में सूरदास के पश्चात मीराबाई को उच्च स्थान प्राप्त है। मीरा के नाम तथा मृत्यु के संबंध में बहुत मतभेद पाये जाते हैं। अनुमानतः उनका जन्म 1526 ई. में तथा मृत्यु 1546 ई. में हुई।

मीरा, राठौर रत्न सिंह की एकलौती बेटी थी। बाल्यकाल से ही इनका ध्यान कृष्ण भक्ति की ओर लग गया था। इनका विवाह राणा सांगा के पुत्र कुँवर भोज राजा से हुआ था। परंतु दुर्भाग्यवश कुछ ही वर्षों के पश्चात पति की मृत्यु हो गयी विधवा मीरा का मन राज घरानों की चहल-पहल में न रह सका। फलस्वरूप वह मंदिरों में जाकर साधु संतों की संगति में रहने लगी। मीरा ने कृष्ण को अपना पति माना और उन्हीं के विरह में अपने पद गाने लगी। देवर द्वारा अनेक कष्ट दिये जाने पर भी मीरा अपने भक्ति-मार्ग से टस-से-मस न हुई और कृष्ण की कीर्तन करते हुए कृष्णमय हो गईं।

मीराबाई अधिक शिक्षित नहीं थीं परंतु साधु-संतों की संगति में रहने के कारण उनका अनुभव और ज्ञान व्यापक बन गया। उन्होंने अपने प्रियतम कृष्ण के प्रेम की मस्ती में झूमते और नाचते हुए जो कुछ मुख से निकाला वही एक मधुर गीत बन गया। नरसी जी का मायरा, राग गोविंद तथा राग सोरठा मीरा की प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। मीरा की भाषा ब्रज-राजस्थानी मिश्रित लोक भाषा थी जो लोकप्रिय होते-होते साहित्यिक भाषा बन गई। इन्होंने गीत शैली में अपने पदों और गीतों की रचना की।

मीरा की भक्ति माधुर्य भाव की है। इनके गीतों में भगवान के आत्म-समर्पण की भावना विद्यमान है। वेदना की तीव्र अनुभूति के कारण उनका प्रत्येक गीत हृदय पर सीधा प्रभाव डालता है। सामाजिक रुढ़ियों का विरोध होते हुए भी उनकी कविता में भारतीय इतिहास तथा संस्कृति की सुंदर झलक दिखाई देती है। वास्तव में, मीराबाई एक विख्यात कवयित्री थी। वे कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम रखती थी।

पाठ में दिए गए द्वितीय पद में मीरा की श्रीकृष्ण के प्रति अनन्य भक्ति प्रकट हुई है। उन्होंने कृष्ण के अनुराग में लोक-लाज और घर-परिवार की मर्यादाएँ तोड़ दी हैं। वे अपने प्रभु के प्रति प्रेम प्रकट करते हुए कहती हैं -

हे प्रभु, तुम्हारी यह दासी अपने पैरों में घुँघरू बाँधकर आपके प्रेम में नाच उठी है। अब सारी दुनिया इस प्रेम के खुले दृश्य को देख और सुन लें। यह सच है कि मैं अपने प्रभु की स्वयं दासी बन गई हूँ, अर्थात् अपनी इच्छा से कृष्ण की दीवानी हो गई है। लोग मुझे पागल कहते हैं। मेरे इस खुले कृष्ण-प्रेम पर सास मुझे कुल-कलिकिनी कहती है। वह कहती है कि मैंने यह कर्म

करके अपने कुल की छवि को मिट्टी में मिला दिया है। राणा जी ने मुझे मार डालने के लिए विष का प्याला भरकर भेजा। मैं उस प्याले को भी सहर्ष पी गई। परंतु कृष्ण की इस दासी पर उस जहर का कोई प्रभाव नहीं हुआ। मीरा कहती है- मेरे प्रभु तो गिरिधर कृष्ण हैं। मुझे सहज जी उस अविनाशी प्रभु के दर्शन सुलभ हो गए हैं।

बाबरी अर्थात् पागल, दीवानी मीरा कृष्ण भक्ति में अपनी सुध-बुध खो चुकी है। उसे संसार की किसी परंपरा, रीति-रिवाज, मर्यादा अथवा लोक-लाज का ध्यान नहीं है। इसीलिए लोग उसे बावरी कहते हैं। संसारी लोग मीरा की भक्ति की पराकाष्ठा को पागलपन मानकर उसे बावरी कहते हैं। कुछ लोग सोच रहे हैं कि मीरा राजसी वैभव और सुख को ठुकराकर कृष्ण भजन गाती हुई घूम रही है। ऐसा मूर्खतापूर्ण कार्य तो कोई पागल ही कर सकता है।

मीरा के व्यवहार को उनके ससुरालवाले अपने कुल की मर्यादा के विरुद्ध मानते थे। अतः मीरा को मर्यादित व्यवहार करने के लिए उन्होंने कई बार समझाया और जब वह कृष्ण भक्ति से नहीं हटी तो उन्होंने मीरा को मारने का प्रयास किया। राणा ने मीरा को मारने के लिए जहर का प्याला भेजा जिसे मीरा हँसते-हँसते पी गई। उसे मारने का प्रयास करने वाले की सभी योजनाएँ धरी रह गईं।

उस समय के राजपूत समाज में और समस्त राजस्थान में पर्दा-प्रथा थी। मुगल शासकों की अत्याशी और अत्याचारों से बचने के लिए स्त्रियाँ घर से बाहर भी नहीं निकलती थीं। वे घर में भी अपना चेहरा, हाथ-पैर ढँककर रखती थीं। ऐसे समाज में मीरा हर बंधन काटकर कृष्ण का भजन करती गली-गली घूमती रही।

विशेष-

इस पद में मीरा पर किए गए अत्याचारों का पता चलता है।

मीरा की कृष्ण के प्रति अटूट निष्ठा व्यक्त हुई है।

मंदिर में तन्मय होकर नाचती हुई मीरा का चित्र आँखों के सामने सजीव हो उठता है।

कृष्ण के अनुराग में मीरा कृष्ण को नए-नए नामों तथा विशेषणों से पुकारती हैं। जैसे -नारायण, गिरिधर, नागर, अविनासी।

अनुप्रास का सुंदर प्रयोग है- कहै कुल-नासी, प्रभु गिरिधर नागर।

संगीत, लय, और माधुर्य की दृष्टि से यह पद मनोरम बन पड़ा है।

भक्ति रस की सुंदर अभिव्यक्ति है।

द्वारा -

संतोष कुमार खरवाल

प्रशिक्षित स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)

परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय-2, जादुगोड़ा